साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 52, जनवरी(प्रथम) , 2019

जन्मदिन पर खास:

भारत रत्न अटल

कमल से बेदाग रहे अटल

घनश्याम बादल

'काल के कपाल पर लिखता मिटाता हूं मैं गीत नया गाता .... ' और मैने जन्म नहीं मांगाा था किंतु मरण की मांग करुंगा '' , जाने कितनी बार जिया हूं जाने कितनी बार मरा हूं , जन्म मरण के फेरे से मैं इतना पहले नहीं डरा हूं । 25 दिसंबर ,1924 को जन्मे अटल में काल से अटल रार करने का एक ऐसा माद्दा था जिसने उन्हे राजनीति जैसे कलुष से भरे क्षेत्र में भी एक चमकदार नायाब हीरा बनाए रखा ।

अटल जी वो पहले शख्स थे जिन्होने इस मिथक को तोडा कि भारतीय राजनीति में नेहरु वंष के सिवा कोई और देष नहीं चला सकता। वें ऐसे अजातशत्रु राजनेता थे जिन्होने अपनी वाक्पटुता और अद्भुत भाषण कला से ने केवल आम जनता को अपना मुरीद बनाया अपितु उनके कट्ट्र विरोधी भी उनके कायल बनेरहे । ब्रिटिश दल के भारत आने पर नेहरु जी ने उनका परिचय कुछ यूं कराया था ' यें हमारे विपक्ष के युवा नेता हैं , जो मेरे कटु आलोचना का कोइै मौका नहीं खोते , पर उनमें एक उज्जवल भविष्य देखता हूँ।'' यानि अटल जी में नेहरु ने बहुत पहले ही भावी प्रधानमंत्री देख लिया था ।

स्वयं इंदिरा गांधी ने उन्हे एक से अधिक बार कांगेस में आने को कहा पर अटल नही माने । वें इंदिरा की ज़िद के कट्टर विरोधी थे पर जब इंदिरा ने 1971 का जंग जीता तो उन्होने राजनीतिक समीकरणों का ताक पर रख कर उन्हे 'दुर्गा ' तक कह दिया । अटल

जानते थे कि राजनीति सब कुछ नहीं है, वें जो कहना होता कह देते थे । पर, एक गहरे चिंतक की दृष्टि उन्हाने कभी नहीं खोई ।

अटल बिहारी वाजपेयी जीवट के धनी थे उन्होने सारी दुनिया की परवाह किए बगैर भारत को परमाणु शक्तिसंपन्न देश बनाया , विपक्ष में रहकर भी संयुक्त राष्ट्रसंघ में देश का प्रतिनिधित्व किया , वहां पहली बार हिंदी का परचम लहराया । पिछले दस बरस से भी ज्यादा समय से बीमार होने के बावजूद व सत्ता में न होते हुए भी अटल बिहारी वाजपेयी जनमानस के सर्वलोकप्रिय नामों में शुमार रहे , उनकी सौम्यता औा समय आने पर निर्भय होकर प्रहार करने की क्षमता अतुलनीय रही , वें केवल जिंदा नहीं रहे अपितु उन्होने ज़िन्दगी को जिया , वें हार से नहीं डरे , जीत में फूले नहीं और यही है अटल के वें पक्ष विपक्ष सब के लिए सर्वमान्य रहे यही रहा अटल के 'सब पर भारी,अटल बिहारी होने का राज़ '।

1951 में जनसंघ के संस्थापक सदस्य अटल ने अपनी कुशल वक्तृत्व शैली से राजनीति में रंग जमाया । पर वें लखनऊ में लोकसभा उप चुनाव हार गए , 1957 में जनसंघ ने उन्हें तीन लोकसभा सीटों लखनऊ, मथुरा और बलरामपुर से चुनाव लड़ाया लखनऊ में हारे , मथुरा में जमानत जब्त हुई लेकिन बलरामपुर से चुनाव जीतकर दूसरी लोकसभा में पहुंचे, यह उनके अगले पाँच दशकों के अटूट संसदीय करियर की शुरुआत थी। 1968 से 1973 तक भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष रहे अटल आपातकाल में जेल में गए व 1977 में जनता पार्टी सरकार में विदेश मंत्री बने , इस दौरान संयुक्त राष्ट्र अधिवेशन में उन्होंने हिंदी में भाषण दिया । 1980 में वें बीजेपी के संस्थापक सदस्य रहे और 1986 तक अध्यक्ष व बीजेपी संसदीय दल के नेता भी रहे। अटल बिहारी वाजपेयी नौ बार लोकसभा के लिए चुने गए ,दूसरी लोकसभा से तेरहवीं लोकसभा तक. बीच में कुछ लोकसभाओं से उनकी अनुपस्थिति भी रही. खासतौर से 1984 में जब वह ग्वालियर में कांग्रेस के माधवराव सिंधिया के हाथों पराजित हो गए । 1962 से 1967 और 1986 में राज्यसभा के सदस्य रहे । 16 मई 1996 को पहली बार प्रधानमंत्री बने. लेकिन लोकसभा में बहुमत साबित न कर पाने की वजह से 31 मई 1996 को संख्या बल के आगे नतमस्तक होने के वक्तव्य के साथ त्यागपत्र दे दिया । इसके बाद 1998 तक अटल लोकसभा में विपक्ष के नेता रहे. व 1998 के आम चुनावों में सहयोगी पार्टियों के साथ लोकसभा में अपने गठबंधन का बहुमत सिद्ध

किया और इस तरह एक बार फिर प्रधानमंत्री बने. लेकिन जयललिता व अन्नाद्रमुक के द्वारा गठबंधन से समर्थन वापस ले लेने से उनकी सरकार गिर गई , एक बार फिर आम चुनाव हुए और 1999 में हुए चुनाव राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के साझा घोषणापत्र पर हुए चुनावों में वाजपेयी के नेतृत्व को एक प्रमुख मुद्दा बनाया गया तो गठबंधन को बहुमत हासिल हुआ और वाजपेयी ने एक बार फिर प्रधानमंत्री की कुर्सी संभाली इस बार वें पूरे कार्यकाल के प्रधानमंत्री रहे पर अगले चुनावों से पहले ही अटल ने चुनावी राजनीति से संन्यास ले कर एक नयापद निर्लिप्तता का मानक बनाया जिसपर वें मरणोपर्यंत अटल रहे । उसके बाद न राजनीति की और न ही चुनाव लड़ा अटल उस समय रिटायर हुए जब वें चाहते तो राजनीति में बहुत कुछ कर सकते थे पर अटल की यही तो खूबी रही है कि वें पदों से भागते रहे और पद उनके पीछे भागते रहे हैं ।

अब से 94 साल पहले शिंदे की छावनी के स्कूल टीचर के घर पैदा हुए सब के प्यारे 'अटल्ला' के लिए जीवन का शुरुआती सफर आसान न था. प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज और कानपुर के डीएवी कॉलेज में पा कर उन्होंने राजनीतिक विज्ञान में स्नातकोत्तर किया और पत्रकारिता शुरु की । राष्ट्रधर्म, पांचजन्य और वीर अर्जुन का संपादन किया व पं0 दीनदयाल उपाध्याय के सान्निधय ने उनके प्रखर रूप व प्रतिभा को उजागर किया । अटल ने अपनी कुशलता से तात्कालिक पत्रकारिता नई दिशा व धार दी थी ।

30 जनवरी 1948 को गांधी जी की हत्या के बाद सरकार द्वारा संघ पर प्रतिबंध लगाने पर 'राष्ट्रधर्म' कार्यालय सील कर दिया गया तो अटल भूमिगत हो गए। न्यायालय के आदेश से राष्ट्रधर्म का ताला खुलने के बाद अटल ने नवंबर में 'स्वदेश' दैनिक भी शुरु कर दिया। बाद में काशी से प्रकाशित 'चेतना' साप्ताहिक का भी संपादन किया ।

प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के शासन काल में भारत एक सशक्त परमाणु शक्ति सपन्न राष्ट्र बना और स्वच्छ सुशासन की राजनीति का उद्घोष हुआ। अटलजी एक महान राजनेता ही नहीं अपितु साहित्यकार, पत्रकार, संपादक व कुशल कवि तथा वक्ता भी थे । बाद में भले ही बीमारी के चलते वें नहीं बोल पाते पर अपने वक्त में उनका बोलने का

अंदाज निराला व मनमोहक रहा । उनकी वकतृत्व कला के लिए नेहरु व इंदिरा जैसे विपक्षी नेता भी उन पर फिदा रहे हैं , इसी वजह से विदेशमंत्री के रूप में वें सर्वाधिक लोकप्रिय हुए तथा विदेशों में व अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की छवि को निखारने में अद्भुत योगदान दिया। यह अटल जी के व्यक्तित्व का ही प्रभाव था कि अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर पाकिस्तान जैसी भारत विरोधी शक्तियां भारत के प्रति विद्वेष की भावना भरने में नाकामयाब रहीं। वें खुद विद्वेष से दूर थे इसीलिए खुद समझौता एक्स्प्रेस लेकर पाकिस्तान गए ए मुषर्रफ को आगरा बुलवाया पर उनकी चिकन बिरयानी के जवाब में जब कारगिल हुआ तो अटल ने पाक को मुह तोड़ ज़वाब भी दिया ।

अटल राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय व संवैधानिक विषयों के गूढ़ ज्ञाता रहे । 1946 में वकालत की पढ़ाई बीच में ही छोड़ खुद को संघ के प्रति समर्पित कर दिया। अटल कहते थे कि भारत जमीन का टुकड़ा नहीं जीता-जागता राष्ट्र पुरूष है। यह जीवन का आदर्श व एक जीवन पद्धति है जहां से ज्ञान की रश्मियां सम्पूर्ण विश्व में फैली हैं। यही वह देश है जिसने सम्पूर्ण विश्व को आध्यात्म का संदेश दिया है और विश्वगुरू कहलाया है। यह देश सदैव से धर्म, दर्शन, अध्यात्म के उच्चतम सिध्दान्तों का देश रहा है और जिसके वातावरण में मानवता तथा विश्व के बंधुत्व का राग ध्वनित होता रहता है। हमारी विरासत है, हमारी संस्कृति । भारत वन्दन की भूमि है, अभिनन्दन की भूमि है।

अपने प्रधामंत्रीत्व काल में अटल का रणनीतिक कौशल देखकर राजनैतिक समीक्षक दंग रहे। कई विपरीत रीतियों -नीतियों वाले दलों के गठबंधन को उन्हानें बड़े ही कुषल ढंग से संभाला , एक तरह से मेंढकतौल के खेल में भी वें सफल ही रहे । परमाणु बम बनाने के बाद भी उन्होने देष को अमेरिका व दूसरे देषों के दबाव में नही आने दिया । उस समय वे बहुत कम बोले परन्तु जो बोलेे वह अन्तर को छूने वाला व रणनीतिक कौषल से भरा होता था । एक परिश्रमी, पराक्रमी भारत व विजयी भारत बनाने का अटल का सदा ही एक सपना रहा । जब अटल जी ने राजनीति को अलविदा कह रखा है तब उनके धुर विरोधी रहे नेता भी मानते थे कि उनका चिंतन व मनन अद्भुत रहा , उनका वह रुक - रुक कर बोलना आज भी याद आता है । एक हिंदुवादी दल में होते हुए भी धर्मनिरपेक्ष नेता के रूप में अटल बेमिसाल रहे हैं ।

अटल की खास बात रही है कि वें वक्त पड़ने पर अपनी बेलाग बातें कहने से कभी नहीं चूके। जब लालकृष्ण अडवाणी की रथ यात्रा के बाद संसद में उन्हे संदीय दल का नेता बनाया जा रहा था तब उन्होने कहा था , ''आड़वाणी जी के इन भालू बंदरों को संभालना मेरे बस की बात नहीं है। ''पर न केवल संभाला अपितु अगले ही चुनाव में सरकार बनाने में सफल रहे।
जब गुजरात में गोधरा कांड हुआ तब वें प्रधानमंत्री थे और वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वहां के सशक्त मुख्यमंत्री थे जब पत्रकारो ने पूछा अब मुख्यमंत्री को क्या करना चाहिए तब अटल ने बेलाग कहा था उन्हे अपना राजधर्म निबाहना होगा।

बिना किसी के दबाव में आए अटल ने अपना तीसरा कार्यकाल जिस तरह पूरा किया वह भारत के धर्मरिपेक्ष स्वरूप की छवि का एक स्वर्णकाल कहा जा सकता है दंगे व पंगे से रहित उस काल ने अटल को बहुत पहले ही भारतरत्न बना दिया था जिस पर भारत सरकार की मोहर तो बहुत बाद नरेंद्रमोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद लगी। अगर उन्हे भारत रत्न नहीं भी मिलता तो भी जनगणमन के भारतरत्न तो वें बने ही रहते।

अटल 94 साल हमारे बीच रहे अटल १६ अगस्त को इस वर्ष दैहिक से दैविक हो गए पर उनकी छवि, अद्भुत भाषण कला वह रुक रुक कर बोलना और देश के लिए दल को गौण कर देना हमेशा उनकी याद दिलाता रहेगा।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें